International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

इंदौर का नगरीकरण - होलकर रियासत काल से 2025 ईस्वी के मध्य

Dr. Madhuri Modi

Asst. Professor, Humanities, AIMSR

सारांश

"'नगर' एवं 'नागरिक' यह दोनों शब्द एक दूसरे के उद्बोधन हैं जैसे नागरिक होंगे,वैसे ही नगरों के विकास एवं उनकी वृद्धि की संभावना होगी। सच तो यह है कि नगर एक प्रकार से नागरिकों की संस्कृति एवं सभ्यता-दोनों का एक जागरूक चित्र होता है। जिस प्रकार के नागरिकों की बहुलता एवं प्रमुखता होगी, जैसा उनका रहन-सहन, आचार-विचार, व्यवहार, वाणिज्य तथा व्यवसाय होगा, वैसी ही छाप उस नगर पर जिसके वे नागरिक हैं अनिवार्य रूपेण पड़ेगी। स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, व्यापारिक मंडी, पुनर्वास भी नगरों के विकास व नगरीकरण के लिए उत्तरदायी कारक हैं। इंदौर भी अपनी स्वास्थ्यवर्धक जलवायु और व्यापारिक मंडियों के कारण भी नगरीकृत हुआ।पैट्रिक गिडीज़, द्वारा इंदौर को आधुनिक तरीके से विकसित करने हेतु 1911 में योजना प्रस्तुत की गयी, जिसके अनुसार कालांतर में इंदौर का विकास सुनियोजित तरीके से किया गया।

नगरीकरण की अवधारणा, शहरों के उदय के कारण

नगर शब्द को हम आधुनिक काल में टाउन, सिटी, शहर, महानगर आदि नामों से भी जानते हैं। हेराल्ड मेयर- "नगरीय भूगोल के अध्ययन का केंद्र बिंदु मानव है।' "आर. ई. मर्फी- नगरीय भूगोल का संबंध नगरीय विकास के स्थानिक दृष्टिकोण से है। यह नगरीय केंद्रों के क्षेत्रीय प्रतिरूपों का निर्धारण एवं उनकी व्यवस्था की व्याख्या करता है।"

नगर की संकल्पना

मैकाइवर एवं पेज "नगर अन्वेषणो का केंद्र होते हैं तथा नगर के निरंतर प्रभाव केवल सामाजिक संगठनों में ही परिवर्तन नहीं करते वरन् नगरीय प्रभावों से सामाजिक रूढ़ियां तथा ग्रामीण समाज की प्रचलित मान्यताओं का नाश होता है।"वान रिचयोकिन लिखते हैं "नगर एक संगठित समूह रखता है, जिसमें सामान्यतया कृषि कार्यों के विपरीत प्रमुख व्यवसाय वाणिज्य तथा उद्योग से संबंधित होते हैं ।" संयुक्त

राष्ट्रीय संघ के द्वारा 20 हजार न्यूनतम जनसंख्या रखने वाले स्थाई अधिवास को नगर स्थान के रूप में मान्यता दी गई है।

भारत में नगर भारतीय जनगणना (1961 से 2011 के अनुसार) किसी मानवी बस्ती कि नगर की मान्यता के मापदंड इस प्रकार हैं -

1. मानवीय अधिवास जहां नगरपालिका, महापालिका, छावनी बोर्ड अथवा नोटिफाइड क्षेत्रीय समिति कार्यरत हों।
2. मानवीय अधिवास जिसकी न्यूनतम जनसंख्या 5000 व्यक्ति हो।
3. मानवीय अधिवास जिसकी कुल कार्यशील जनसंख्या का 75 प्रतिशत भाग के गैर-कृषिगत कार्यों में संलग्न हो।
4. मानवीय अधिवास जिसमें जनसंख्या का प्रति किलोमीटर घनत्व 400 व्यक्ति से अधिक हो।

महानगर - एच. एस. गर्ग के अनुसार ''वस्तुतः जनसंख्या, जनसंख्या घनत्व, यातायात, संचार, उद्यमों तथा अन्य कार्यों के आधार पर ही किसी केंद्रीय नगर को महानगर कहा जा सकता है।

सन्नगर तथा नगरीय समूह(Conurbation and Urban Agglomeration)

नगर माल या सन्नगर एक ऐसी नगरीय बस्ती है, जिसमें कई नगर या नगर क्षेत्र अपना अलग-अलग अस्तित्व रखने के बावजूद एक बड़े नगरीय समूह के अंतर्गत सम्मिलित किए जाते हैं। इस प्रकार के नगरीय समूह के कई नगर पास-पास स्थित होते हैं। एक नगर से दूसरे नगर के मध्य में नगरीकृत क्षेत्रों का अस्तित्व मिलता है जबकि नगरीय समूह के सभी नगरों में एक नगर केंद्रीय व सर्वप्रमुख होता है। इन सभी नगरों के कार्यों में परस्पर आत्मनिर्भरता मिलती है। **इंदौर नगर भी इसी श्रेणी में आता है।**

नगरीकरण - समाजशास्त्री ई. डब्ल्यू. एस. बर्गेस के अनुसार "ग्रामीण क्षेत्रों के नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तित होने की प्रक्रिया नगरीकरण कहते हैं।"

"'नगर' एवं 'नागरिक' यह दोनों शब्द एक दूसरे के उद्बोधन हैं जैसे नागरिक होंगे,वैसे ही नगरों के विकास एवं उनकी वृद्धि की संभावना होगी। सच तो यह है कि नगर एक प्रकार से नागरिकों की संस्कृति एवं सभ्यता-दोनों का एक जागरूक चित्र होता है। जिस प्रकार के नागरिकों की बहुलता एवं प्रमुखता होगी, जैसा उनका रहन-सहन, आचार-विचार, व्यवहार, वाणिज्य तथा व्यवसाय होगा, वैसी ही छाप उस नगर पर जिसके वे नागरिक हैं अनिवार्य रूपेण पड़ेगी। भारत के प्राचीन प्रसिद्ध नगरों को देखिये। उदाहरण के लिए नालंदा का विकास एक गुरु गृह मुनि-कुटीर अथवा साधारण साधु-उटज से हुआ था। शनैः शनैः विद्या और विनय, आचार तथा ज्ञान, धर्म और संस्कृति-इस आधार शिलाओं पर एक महान् नगर-विश्वविद्यालय नगर-यूनिवर्सिटी का जन्म हुआ।"[1]

अगर हम इंदौर के संदर्भ में देखें तो सुखलिया, मांगलिया, पिपलिया, कनाडिया, बांगड़दा, बिचौली हप्सी, बिचौली मरदाना का स्वरूप ग्रामीण से नगरीय इंदौर में तब्दील हो गया है।

नगरीयवाद या नगरीयता - एम. बी. क्लिनार्ड- "नगरीय जीवन जीने की एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें जीवन मूल्यों में संघर्ष, सामाजिक जीवन में संघर्ष, सामाजिक जीवन में तीव्र परिवर्तन अत्यधिक गतिशीलता तथा व्यक्तिवादी जीवन पद्धति के प्रति झुकाव मिलता है।"

नगरों की स्थल तथा स्थिति की संकल्पना - एच. एस. गर्ग के अनुसार- किसी नगर की स्थापना के लिए सर्वप्रथम उपयुक्त स्थल का चयन आवश्यक होता है। जबकि उस नगर का भावी विकास तथा विस्तार तभी संभव होता है जबकि नगर के चारों ओर (समीपवर्ती) के क्षेत्र की स्थिति भी उपयुक्त हो। अनुकूल बसाव स्थिति के ना होने पर नगर का विकास रुक जाता है।[2]

नगरीय आर्थिक आधार की संकल्पना - नगरीय अध्ययनों में आधारभूत कार्यों के रूप में नगर के आर्थिक आधारों को विशेष बल प्रदान किया जाता है, क्योंकि नगर के आधारभूत कार्य नगरीय बस्ती के हृदय के रूप में होते हैं। जो नगरीय बस्तियों में निवासित उपभोक्ताओं की स्थानीय सेवाओं की आपूर्ति करते हैं। एच जी क्रील "प्रारंभ में नगरों के विकास में प्रशासनिक योद्धाओं ने अपने निवास स्थान अलग बनाएं जो धीरे-धीरे नगरों के रूप में विकसित हो गए। यह भी कहा जा सकता है कि योद्धाओं के समूह किसानों के समूह से ही बने होंगे इसलिए इनके पास भी धातु के अस्त्र-शस्त्र होंगे। ऐसा भी हो सकता है कि योद्धा बाहर के हो और विजय के पश्चात वह भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर बस गए हों और जहां वे जाकर बसे हो वह स्थान कालांतर में नगर बन गए हो।" इंदौर के संदर्भ में यह कथन कुछ कुछ साम्यता रखता है। इंदौर 19वीं शताब्दी के विकसित आधुनिक काल का नगर है - इंदौर की उत्पत्ति और विकास को प्रभावित करने वाले कारक

प्राकृतिक कारक -

स्थलाकृति,जलवायु,जल आपूर्ति ये तीन तत्व मिलकर किसी भी नगर की प्रकृति का निर्धारण करते हैं। इंदौर में समतल उपजाऊ मैदानी भाग, समशीतोष्ण जलवायु (मृदुल जलवायु दशाएं), भूमिगत जल की पर्याप्त उपलब्धता (मालव माटी गहन गंभीर, डग-डग रोटी, पग-पग नीर) सतत वाहिनी नदियों का जाल (कान्ह, सरस्वती) नगरों की स्थापना के अनुकूल कारक होते हैं।

आर्थिक कारक (तत्व) -

मानव के आर्थिक क्रियाकलापों का संकेंद्रण जैसे खनन, औद्योगिक एवं व्यापारिक विकास, परिवहन (क्रियायें) सुविधायें आस-पास के क्षेत्रों में कच्चे माल की उपलब्धता होना चाहिए। इंदौर वास्तव में एक

व्यापारिक व औद्योगिक केंद्र है क्योंकि इसकी इस उपरोक्त विशेषता की वजह से इसे मध्य प्रदेश की व्यापारिक राजधानी भी कहा जाता है।

"जहाँ प्राचीनकाल एवं मध्यकाल में किसी क्षेत्र विशेष का विकास वहाँ के धार्मिक केन्द्र एवं प्रशासनिक केन्द्र के कारण होता था वहीं आधुनिक युग में ये कारण, बेमानी हो गये हैं। उदाहरण के लिये अमृतसर, अजमेर, गोरखपुर, हरिद्वार, पुरी आदि ऐसे नगर थे जो अपनी धार्मिक गतिविधि के साथ ही शिक्षा के केन्द्र के रूप में नगरीय संस्कृति के वाहक थे। परन्तु आधुनिक काल की बात हम करें तो ये कारक उतने मायने नहीं रखते, जितने कि आर्थिक। यदि भूमि उर्वर हो, फसलों एवं प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता हो और यातायात के साधनों की दृष्टि से वह समृद्ध हो तो किसी भी स्थान विशेष का विकास तीव्र गति से होता वहाँ की जनसंख्या भी उसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। उदाहरण के लिये साथ ही मुम्बई, अर्नाकुल्लम, चेन्नई, विशाखापट्टनम, कोच्चि, इन्दौर और कलकत्ता (कोलकाता) के नाम लिये जा सकते हैं। सन् 1991 के जनगणना रिपोर्ट देखें तो नगरीय विकास की दृष्टि से म.प्र. का स्थान बारहवाँ है तथा आन्ध्रप्रदेश पहले स्थान पर है।ष् वहीं 12वें स्थान पर होने के बाद भी यदि इन्दौर ने अपना स्थान राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बनाया है तो इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण आर्थिक ही है। और ऐसे में यदि प्रशासन समय के अनुसार अपने को ढालने में सक्षम हो तो सोने में सुहागा वही बात फलीभूत हो जाती है।"[3]

धार्मिक कारक -

महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल जैसे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर आदि की उपस्थिति का भी नए नगरों की उत्पत्ति व विकास में योगदान है, इंदौर में बिजासन, अन्नपूर्णा, खजराना गणेश मंदिर, जैन तीर्थ (हिंकारगिरी, गोम्मटगिरी) कई मस्जिद, गुरुद्वारे (इमली साहब गुरुद्वारा) व रेड चर्च आदि कई गिरजाघर हैं।

राजनीतिक कारक -

राजा और रियासतें वह सुरक्षात्मक दृष्टि से नदी व पहाड़ के निकट भी बसाहटें होती थी। कई बार प्रशासनिक व्यवस्थाओं के संचालन हेतु भी राजधानी, प्रांतीय मुख्यालय, जिला व तहसील विकासखंड मुख्यालय में प्रशासनिक कार्यालयों की स्थापना होने से इन मुख्यालयों का नगरीय विकास तेजी से हुआ है। इंदौर होलकर रियासत की राजधानी व आजादी के पश्चात् संभाग के रूप में विकसित हुआ है।

अन्य कारक - जैसे स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, व्यापारिक मंडी, पुनर्वास भी नगरों के विकास व नगरीकरण के लिए उत्तरदायी कारक हैं। इंदौर भी अपनी स्वास्थ्यवर्धक जलवायु और व्यापारिक मंडियों के कारण

भी नगरीकृत हुआ।

आधुनिक युग में भारत में नगरों की उत्पत्ति एवं विकास भारत में 1707 से सन् 1858 के मध्य की अवधि में भारत में यूरोपियनों के उपनिवेशों तथा भारतीय राजाओं के राज्यों का मिला-जुला प्रतिरूप अस्तित्व में था। उक्त अवधि में भारतीय राजाओं के राज्यों में राजपूत, निजाम, मैसूर, अवध, रोहिलखंड तथा मराठा आदि राज्य उल्लेखनीय थे, जिनमें अपने-अपने राज्यों की राजधानी के रूप में नगरों का विकास हुआ। इनमें भरतपुर, कानपुर, फैजाबाद, गाजियाबाद, फर्रुखाबाद, मिर्जापुर, झांसी, देहरादून, इंदौर प्रमुख हैं।

दूसरी ओर यूरोपीय लोगों द्वारा उक्त अवधि में देश के कई नगरों का विकास प्रशासनिक व व्यापारिक औपनिवेशिक केंद्रों के रूप में किया गया। इंदौर में भी रेसिडेंशियल एरिया था और अंग्रेज रीजेंट निवास करते थे।सन् 1858 के बाद देश में अंग्रेजों द्वारा रेल मार्गों का विस्तार किया गया। इसके अतिरिक्त प्रशासनिक ढांचे को भी मजबूती प्रदान करने के साथ-साथ व्यापारिक एवं औद्योगिक क्रियाकलापों को भी बल प्रदान किया गया, जिसके कारण देश के विभिन्न भागों में परिवहन मार्गों पर कई महत्वपूर्ण नगरों का विकास हुआ। पैट्रिक गिडीज़, उनका जन्म 2/10/1854 को यूनाइटेड किंगडम में हुआ था, इनके द्वारा इंदौर को आधुनिक तरीके से विकसित करने हेतु 1911 में योजना प्रस्तुत की गयी, जिसके अनुसार कालांतर में इंदौर का विकास सुनियोजित तरीके से किया गया।[4]

गिफ्ट टेलर ने अपनी किताब अर्बन ज्योग्राफी में नगरों की विकास की जो सात अवस्थाएं बताई है उनमें से इंदौर प्रौढ़ावस्था व उत्तर प्रौढ़ावस्था का शहर माना जा सकता है, क्योंकि इस अवस्था में उन्होंने ऐसा माना है, कि इस अवस्था में शहर के कई आर्थिक क्रियाकलापों का विकास हो जाता है। शहर में अनेक सुविधाओं एवं सेवाओं की उपलब्धता हो जाने के फलस्वरुप नगर में ग्रामीण जनसंख्या का आवागमन होने लगता है तथा कुछ ग्रामीण जनसंख्या प्रतिवर्ष नगर में स्थाई रूप से बसनें लगती है, तो शहर में मकान भी चार प्रकार के दिखाई देते हैं।

1. प्रथम श्रेणी के मकान अधिक धनी वर्ग के होते हैं जो अपेक्षाकृत अधिक क्षेत्रफल में आकर्षक तथा बहुमंजिला (बड़ी-बड़ी कोठियों के रूप में) होते हैं।
2. द्वितीय श्रेणी के मध्यम धनी लोगों के दो मंजिला मकान होते हैं।
3. तृतीय श्रेणी के मकान सामान्य वर्ग के होते हैं जो एक मंजिलें होते हैं।
4. चतुर्थ श्रेणी में गंदी बस्तियों के निम्न स्तरीय मकान सम्मिलित होते हैं।

तो इंदौर की उत्पत्ति से लेकर आजादी के पूर्व तक इसे हम मोटे तौर पर प्रौढ़ावस्था का वह आजादी के बाद उत्तर प्रौढ़ावस्था का नगर मान सकते हैं क्योंकि जो तत्व टेलर ने उत्तर प्रौढ़ावस्था के बताए हैं वह हमें अब नजर आते हैं, जैसे उत्तर प्रौढ़ावस्था में नगर का विकास अपनी चरम सीमा पर मिलता है। नगर

की समस्याओं को दूर करने के लिए नगर नियोजक नगर को आकर्षक और सुंदर रूप में विकसित करने संबंधी योजनाएं क्रियान्वित करते हैं। विभिन्न कार्यात्मक क्षेत्र (यथा प्रशासनिक, व्यापारिक, आवासीय, औद्योगिक) पूर्णतया अलग-अलग मिलते हैं तथा नगर के बाहर के समीपवर्ती क्षेत्रों में कई उप नगरों का विकास होता है। यही नहीं, नगर की अपनी सीमा में निकटवर्ती क्षेत्र भी सम्मिलित कर लिए जाते हैं।

इंदौर शहर में प्रत्यक्षतः हम देख पाते हैं चाहे वह प्रौढ़ावस्था के तत्व हो या उत्तरप्रौढ़ावस्था अवस्था के जैसे- इंदौर में जो शासकों के महल, पैलेस बने हैं वह क्षेत्रफल में अधिक आकर्षक व बहुमंजिलें हैं व व्यापारिक घरानों की कोठियां भी इसी प्रकार निर्मित है, वहीं द्वितीय श्रेणी के मध्यम व्यापारिक व धनी लोगों के दो मंजिला मकान हैं। सामान्य वर्ग, मुख्यतः एक मंजिला में रहता हैं और गंदी बस्ती के निम्नवर्गीय मकान भी दिखाई देते हैं। वर्तमान समय में अवश्य उन्हें पक्के व स्वच्छ आवास उपलब्ध करवायें जा रहे हैं।

नगर के स्थल चयन को प्रभावित करने वाले निम्न कारक होते हैं

1. सुरक्षा - तो इंदौर शहर को चुनने के पीछे होलकर शासकों का मंतव्य यह था कि दक्षिण में पहाड़ियों व जंगलों से घिरा था।
2. जल व खाद्य आपूर्ति- इस नगर में कान्ह व सरस्वती नदियां बहती हैं व मालवा की उपजाऊ पठारी भूमि व आसपास लगे गांवों में भरपूर अन्य उत्पादित होता है।
3. धरातल का समतल एवं पर्याप्त ऊंचा होना - बाढ़ से बचाव व सुगम आवागमन में इस तरह की भौगोलिक परिस्थितियां उपयुक्त मानी जाती हैं।

नगरीय केंद्रीयता -

स्मेल्स के अनुसार "नगर यातायात मार्गों से संबंधित होते हैं तथा नगरों में वृद्धि भी यातायात मार्गों के सहारे ही होती है। विशेष रूप से यातायात मार्गों के संगम पर या जहां यातायात साधनों का परिवर्तन होता है। वहां नगरों का विकास होता है।

यातायात व मार्ग संगम की दृष्टि से भी इंदौर नगर चूंकि भारत के मध्य में स्थित मध्य प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी मालवा प्रांत का हिस्सा है और चारों ओर से संपूर्ण भारत से जुड़ा शहर है। यहाँ स्थल मार्ग, रेल मार्ग, सड़क मार्ग, वायु मार्ग सभी यातायात के साधन उपलब्ध व मार्ग उपलब्ध हैं।

इन सब नगरीकरण की अवधारणाओं में इंदौर शहर अपना प्रमुख स्थान रखता है।

उन्होंने सन्नगर या नगर माल अभिकल्पना को जन्म दिया जिसके नगर के विकास में भूगोल, संस्कृति और नागरिकों की भावना का विकास शहर के उत्थान के प्रति हो इन तत्वों को समाविष्ट किया है।

इंदौर शहर की पृष्ठभूमि

भारत के स्वतन्त्र होने के पूर्व यह यह इन्दौर रियासत की राजधानी था। मालवा पठार के दक्षिणी छोर पर स्थित इंदौर शहर, राज्य की राजधानी भोपाल से 190 किमी पश्चिम में स्थित है।

"In the census* of Indore, there appear one hundred and fifty-two houses of Mahrattas in that capital; but in one which was taken of eight populous villages in different parts of the country, there are only four houses inhabited by this tribe. The Mahratta citizens, as well as the military of that nation, preserve, like the Brahmins, their love of the Deckan, with which quarter all who are able keep up a constant intercourse and form intermarriages. It is this usage which has prevented their amalgamating with the other inhabitants of Central India."[5]

"इंदौर को उज्जैन से ओंकारेश्वर की ओर जाने वाले नर्मदा नदी घाटी मार्ग पर एक व्यापार बाजार के रूप में स्थापित किया गया था, वहीं इंद्रेश्वर मंदिर (1741) का निर्माण किया गया, जहाँ से ही पहले इंदूर और बाद में इन्दौर नाम प्राप्त हुआ। मराठा काल में बाजीराव पेशवा ने इस क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त कर, अपने सेनानायक मल्हारराव होलकर को यहां का जमींदार बना दिया, जिन्होंने होलकर राजवंश की नींव डाली। होलकर वंश का शासनकाल भारत के स्वतंत्र होने तक रहा। यह मध्य प्रदेश में शामिल होने से पहले ब्रिटिश सेंट्रल इंडिया एजेंसी और मध्य भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी (1948-56) भी था। खान (कान्ह) नदी के तट पर बनी कृष्णापुरा छत्रियाँ, होलकर शासकों को समर्पित हैं।

ब्रिटिश काल के समय से ही इन्दौर को एक औद्योगिक शहर के रूप में विकसित किया जाता रहा है। यहाँ लगभग 5000 से अधिक छोटे-बडे उद्योग हैं। पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र में 400 से अधिक उद्योग हैं और इनमे 100 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के उद्योग हैं। पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र के प्रमुख उद्योग व्यावसायिक वाहन बनाने वाले व उनसे सम्बन्धित उद्योग हैं, इसे "भारत का डेट्राइट" भी कहा जाता है। भारत का तीसरा सबसे पुराना शेयर बाजार, मध्यप्रदेश स्टॉक एक्सचेंज इंदौर में स्थित है।"[6]

मध्य प्रदेश की औद्योगिक राजधानी और देश में मिनी बांबे, के रूप में ख्यात शहर इंदौर की तुलना - यहां के बाशिंदे किसी समय खूबसूरत शहर पेरिस से किया करते थे। वजह थी..... जिस तरह पेरिस के बीचों बीच शहर से नदी बहती है, उसी तरह यहां भी शहर के बीच नदियां निकलती थी। शहर के आसपास तालाब आबाद रहते रहे हैं।

"कल्पना कीजिए- इस शहर के बीच में स्वच्छ पानी से भरी नालियां हुआ करती थी..... जो लालबाग, कागदीपुरा व राजवाड़ा तक आती थी.....! जिसे पानी चाहिए वह घर के पास वह रही नाली से ले ले.....!! एक और रफ्तार.....! शहर में 10-15 नहीं, लगभग 100 खूबसूरत बावड़ियां हुआ करती थीं। एक मंजिला तो कहीं दो-दो मंजिला पूरे मोहल्ले को पानी पिला दी थी और तो और दूसरे इलाके में भी सप्लाई हो जाता था। यहां चलती चड़स से खेती भी की जाती थी। अनेक बावड़ियों पर आप अभी भी स्टैंड, या कुंड और केनाल देख सकते हैं।"[7]

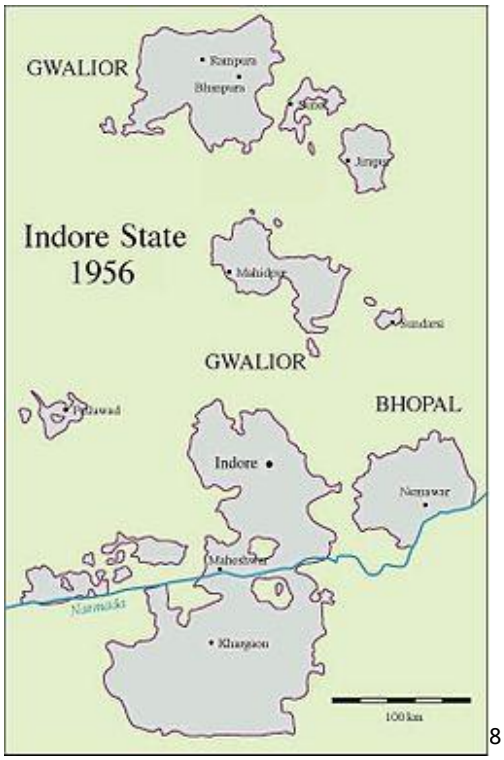

8

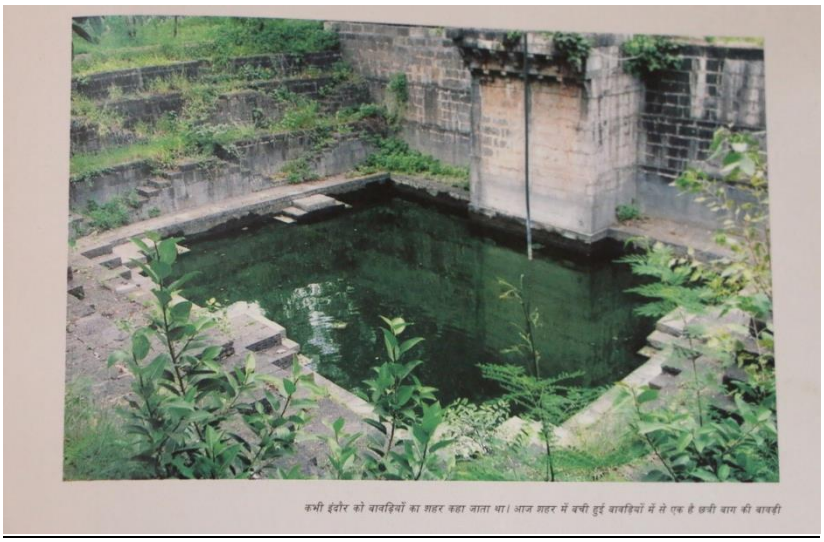

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के “स्मार्ट सिटी मिशन” में 100 भारतीय शहरों को चयनित किया गया है जिनमें से इन्दौर भी एक स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित किया जाएगा।इन्दौर भारत के मध्य प्रदेश राज्य का एक नगर है। जनसंख्या की दृष्टि से यह मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा शहर है, 2011 जनगणना, के अनुसार 2167447, लोगों की आबादी सिर्फ 530 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में वितरित है। यह मध्यप्रदेश में सबसे अधिक घनी आबादी वाला शहर भी है। यह भारत में टीयर-2 शहरों के अन्तर्गत आता है। इंदौर महानगरीय क्षेत्र (शहर व आसपास के इलाके) की आबादी २१ लाख लोगों के साथ राज्य में सबसे अधिक है। यह

इन्दौर जिला तथा इन्दौर संभाग दोनों के मुख्यालय के रूप में कार्य करता है। यह मध्य प्रदेश राज्य की वाणिज्यिक राजधानी भी कहलाती है। इसके साथ ही यह नगर न केवल मध्य प्रदेश बल्कि देश के अन्य क्षेत्रों के लिये शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ल महादेवप्रसाद, भारतीय वास्तु शास्त्र, वास्तु वांगमय प्रकाशनशाला, लखनऊ, पृष्ठ 84
2. गर्ग एच. एस., नगरीय भूगोल, एसबीपीडी पब्लिकेशन
3. उपाध्याय जगदीश चंद्र, मालवा के इतिहास के कुछ पहलू, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली, 2020, पृष्ठ 134
4. टाउन प्लैनिंग टुवर्ड्स सिटी डेवलपमेंटः ए रिपोर्ट दरबार टू दी ऑफ इंदौर
5. Malcolm John, *Memoir of Central India including Malwa... Volume II*, Kingsbury Parbury & Allen Leadenhall Street, London, 1823, Pg. No. 119
6. https://imcindore.mp.gov.in/?page_id=2479&lang=hi
7. चतुर्वेदी क्रांति, मध्यप्रदेश में जल संरक्षण की परंपरा, संचालक जनसंपर्क, भोपाल, मध्यप्रदेश, 2005
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Indore_State